ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 358-360
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

अपरम्परागत सामुद्रिक सुरक्षा चुनौतियाँ : भारतीय पहल

अनिल कुमार विश्वकर्मा
शोध अध्येता– रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-21.12.2023, Revised-25.12.2023, Accepted-30.12.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***किसी भी देश के थल व जल सीमाओं की सुरक्षा और निगरानी का सीधा सम्बन्ध देश की राष्ट्रीय सुरक्षा व विकास से है। वर्तमान समय में दोनों की परम्परागत सुरक्षा चुनौतियों की अपेक्षा गैर परम्परागत सुरक्षा चुनौतियाँ ज्यादा प्रभावित करती है। देश को स्थिरता, सुरक्षा व गतिशीलता प्रदान करने के लिए गैर परम्परागत सुरक्षा चुनौतियाँ विशेष रूप से सामुद्रिक गैर सुरक्षा चुनौतियों का उचित नियंत्रण व शमन अतिआवश्यक हैं अमेरिका में तो इसी कार्य के लिए सन् 2001 के आतंकवादी आक्रमण के बाद अपनी पाचवीं सुरक्षा इकाई के रूप में Department of Homeland Security का गठन किया गया है।***

फलस्वरूप अमेरिका में आज तक कोई दूसरी बड़ी आतंकवादी घटना को विरोधी शक्तियाँ अंजाम नहीं दे सकी। भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से हमे भी इसी तरह की सामुद्रिक सुरक्षा चुनौतियों से सुरक्षा की गारण्टी चाहिए। ताकि शांतिपूर्ण वातावरण में देश विकास व प्रगति के पथ पर बिना किसी बाधा के अग्रसार हो सके।

कुंजीभूत शब्द– गैर परम्परागत, सामुद्रिक सुरक्षा, चुनौती, सीमा सुरक्षा, सैन्य अभ्यास, राष्ट्रीय सुरक्षा, नौसेना।

गैर परम्परागत सामुद्रिक सुरक्षा चुनौतियाँ– कई वर्षों से देश के तटीय भाग पर विभिन्न सुरक्षा समस्याओं ने जन्म लिया है। जिनमें समुद्री आतंकवाद, समुद्री डाका, मादक पदार्थों का व्यापार, अवैध घुसपैठ, जल प्रदूषण समस्या, प्राकृतिक आपदाएँ, जलवायु सम्बन्धी मुद्दे और भू–राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता सुरक्षा सम्बन्धी अन्य चुनौतियाँ आदि समस्याएँ निहित है।

1. समुद्री आतंकवाद– 21वीं सदी में समुद्री स्त्रातजिक परिस्थितियाँ बड़ी तेजी से बदल रही है। समुद्री परिक्षेत्र में आतंकवादी घटनाओं में वृद्धि सितम्बर 2001 के बाद शुरू हुई।[1] समुद्री क्षेत्र में घटित होने वाली आतंकवादी घटनाओं का उद्देश्य स्थलीय आतंकवाद की ही तरह है, जो किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता है। स्थलीय आतंकवाद की अपेक्षा समुद्री आतंकवाद को क्रियान्वित करना जितना सरल है उतना ही कठिन उसे रोकना है। क्योंकि सीमाएँ पूर्णतः खुली होती है, जिसकी निगरानी करना अत्यन्त मुश्किल का कार्य होता है। समुद्री आतंकवाद के खतरे के रूप में जहाजों पर आक्रमण या अपहरण करना शामिल होता है। समुद्री जहाजों में खतरनाक और विस्फोटक पदार्थों जिसमें नाभिकीय पदार्थ जिसका उपयोग आतंकवादी तटीय इलाकों या सुविधाओं को नष्ट करने के लिए करते है। ये आतंकवादी हमारी राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को खतरा उत्पन्न करते है। सामुद्रिक आतंकवादी घटनाओं को प्रेरित करने वाले संगठनों में मुख्यतः अलकायदा, तालिबान, लश्कर–ए–तैय्यबा एवं लिट्टे के अतिरिक्त अन्य छोटे–छोटे संगठन भी है।

2. समुद्री डाका– समुद्री डाका की अवधारणा कोई नई अवधारणा नहीं है, बल्कि इसकी उत्पत्ति सामुद्रिक आतंकवाद से हुई है। लेकिन इसको आतंकवादी घटना की तरह गम्भीरता से नहीं लिया जाता है। समुद्री डाके की घटनाएँ अधिकांशतः उत्तरी हिन्द महासागर क्षेत्र विशेषकर दक्षिण पूर्व एशिया एवं दक्षिण–चीन सागर में घटित हो रही है। समुद्री क्षेत्र में कोई प्रत्यक्ष सीमा रेखा नहीं होती है। जबकि अपराध अन्तर्राष्ट्रीय होते है। समुद्री डाका की घटना को रोकने हेतु व्यापक पैमाने पर मानिटरिंग एवं सर्विलान्स की जरूरत पड़ती है। साथ ही साथ अभिसूचना संगठन को अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के साथ काम करना चाहिए। सन् 2024 में सोमालिया में हुए एक एंटी पाइरेसी आपरेशन में भारतीय नौसेना द्वारा 9 समुद्री डाकुओं को गिरफ्तार करके मुम्बई पुलिस को सौंप दिया गया। भारतीय युद्धपोत आई0एन0एस0 त्रिशुल और आई0एन0एस0 सुमेधा इस आपरेशन में मछुआरी जहाज 'अल कंबर' पर सवार 23 पाकिस्तानी नागरिकों की जान भी बचायी गयी।[2]

3. मादक पदार्थों का व्यापार– अपनी अवस्थिति के कारण हिन्द महासागर क्षेत्र मादक पदार्थों के अवैध व्यापार का प्रमुख केन्द्र है। हिन्द महासागर के पूर्व एवं पश्चिम भाग पर क्रमशः गोल्डेन ट्रिएन्गल एवं गोल्डेन क्रिसेन्ट अफगानिस्तान को जोड़ता है। मादक पदार्थों को एक जगह से दूसरे जगह भेजने के लिए हिन्द महासागर क्षेत्र के संचार मार्ग एक महत्वपूर्ण ट्रान्जिट रूट का कार्य करते है। यह अवैध व्यापार सुरक्षा को भी प्रभावित करता है। दक्षिण पूर्व एशिया एवं दक्षिण पश्चिम एशिय दोनों ही क्षेत्र विश्व के सबसे बड़े ओपियम (मादक पदार्थों) का आपूर्तिकर्ता क्षेत्र है। सन् 2023 में म्यांमार ने 1080 मीट्रिक टन अफीम पैदा किया।[3] श्रीलंका का लिट्टे प्रमुख रूप से ड्रग्स ट्रैफिकिंग में संलग्न है तथा इसके पास अपने जहाज एवं कैडर भी है।

4. अवैध घुसपैठ– अवैध घुसपैठ की समस्या किसी राष्ट्र की सामाजिक, राजनीतिक अस्थिरता की देन है। किसी भी राष्ट्र की निम्न आर्थिक दशा वहाँ की जनता को दूसरे देशों में जाने को विवश करती है। भारतीय अभिसूचना तंत्र ने आगाह किया है कि अवैध घुसपैठ की समस्याँ भारतीय मुख्य भूमि के साथ–साथ द्वीपीय क्षेत्रों में भी बढ़ रही है।[4] अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार सात मिलियन एशियाई दूसरे देशों में कार्यरत है। जिसमें से 50 प्रतिशत से अधिक अवैध तरीके से गये है। अवैध घुसपैठ एक वैश्विक मुद्दा है जो अर्थव्यवस्थाओं, सामाजिक सामंजस्य और राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करता है। म्यांमार के नागरिकों की भारतीय क्षेत्र में अवैध घुसपैठ की रिपोर्टों के मद्देनजर केन्द्र सरकार ने सन् 2021 में मणिपुर, मिजोरम, अरूणाचल प्रदेश और नागालैण्ड की राज्य सरकारों को म्यांमार से भारत में अवैध घुसपैठ को रोकने के लिए कानून के अनुसार उचित कारवाई करने के लिए परामर्श जारी किया।[5]

5. जल प्रदूषण समस्या– आयल टैंकर से रीसने वाले तेल से जल की पारदर्शिता प्रभावित होती है। इससे निकलने वाले टाक्सिक रसायन जल की शुद्धता को प्रभावित करते है। पारदर्शिता प्रभावित होने के कारण जीव–जन्तुओं की दृष्टिगोचरता बाधित होती है

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

तथा घातक रसायन उनके जीवन चक्र को प्रभावित करते है।[6]

समुद्री जल प्रदूषण के कारक के रूप में जलयान निर्माण उद्योग एवं शिपरेकिंग इण्डस्ट्रीज भी इतना ही जिम्मेदार है जितना कि अन्य कारक, क्योंकि इन उद्योगों से निकले वाला अपशिष्ट पदार्थ सीधे समुद्री जल क्षेत्र में ही गिरता है, जिनमें अनेक तरह के विषैले रासायनिक एवं जैविक तत्व घुले रहते है। जहाज तोड़ने के क्षेत्र में विश्व में भारत का कोई प्रतिद्वन्दी नहीं है। क्योंकि भारत में 70 प्रतिशत पुराने जलयानों का स्टील हटाने का कार्य किया जाता है।[7]

सुरक्षा सम्बन्धी अन्य चुनौतियाँ –

उपर्युक्त कारकों के अतिरिक्त कुछ अन्य कारक है जो भारतीय सामुद्रिक सुरक्षा को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है, जो निम्नलिखित है –

1. अमेरिका एवं रूस के बीच आर्थिक और राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा ने अरब सागर क्षेत्र में स्थायी रूप से सैन्य उपस्थिति दर्ज करा दी है। प्रचुर मात्रा में तेल आपूर्ति के भण्डार के कारण खाड़ी क्षेत्र अमेरिका और रूस सहित अन्य शक्तियें के प्रतिस्पर्द्धा का केन्द्र बिन्दु बन गया। अमेरिका ने अरब सागर में सैनिकीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत नौसैनिक अड्डों की स्थापना तथा स्थापित अड्डों का मजबूतीकरण का कार्य भी शुरू किया। यहाँ से ईरान, चीन, रूस, भारत, अफगानिस्तान व पाकिस्तान आदि देश बहुत कम दूरी पर स्थिति है।[8]

2. भारत के दक्षिण में स्थित मालदीव ऐसा देश है जिसकी भौगोलिक अवस्थिति सामरिक दृष्टिकोण से भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मालदीव भारत के लक्षद्वीप से केवल 700 किमी0 की दूरी पर स्थित है, साथ ही ऐसे सामुद्रिक मार्ग से लगा हुआ है। जिससे भारत, जापान और चीन जैसे कई देशों को खनिज पदार्थों की आपूर्ति होती है जो इसके महत्व को और अधिक बढ़ा देती हैं ऐसी आशा है कि मालद्वीव में बढ़ती चीन की उपस्थिति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय सामुद्रिक सुरक्षा को प्रभावित कर सकती है।[9]

3. चीन द्वारा श्रीलंका के हम्बनटोटा बन्दरगाह का आधुनिकीकरण का कार्य किया गया है, भविष्य में आवश्यकता पड़ने पर चीन द्वारा भारत के खिलाफ सैनिक अड्डे के रूप में प्रयोग कर सके। अतः सामुद्रिक क्षेत्रों में चीन की गतिविधियों का प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव भारतीय सुरक्षा पर पड़ेगा।

भारतीय पहल– भारत के पूर्वी तथा पश्चिमी समुद्री तट की सुरक्षा की जिम्मेदारी एक त्रिस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था को सौंपा गया। जिसके अन्तर्गत भारतीय नौसेना को सबसे बाहरी स्तरीय सुरक्षा जिसका कार्यक्षेत्र तट से 200 नॉटिकल मील से आगे का होगा, तटरक्षक बल को समुद्री क्षेत्र के 12 नाटिकल मील से 200 नॉटिकल मील तक की सीमा होगी। इस त्रिस्तरीय प्रणाली के कार्यान्वयन में भारतीय नौसेना व तटरक्षक बल प्रमुख एजेंसियाँ है तथा समुद्री पुलिस, अन्य केन्द्रीय व राज्य एजेंसियाँ सहायक के रूप में कार्यरत है।[10]

मार्कोस या समुद्री कमाडों यह भारतीय नौसेना की एक विशेष बल इकाई है जिसे सन् 1987 में स्थापित किया गया था। इन्हें आतंकवाद के अलावा नेवी आपरेशन, एण्टी पाइरेसी आपरेशन्स में भी इस्तेमाल किया जाता है। मार्कोस ने लिट्टे आपरेशन को रोकने के लिए सन् 1991 में आपरेशन ताशा तमिलनाडु तट पर एक तटीय सुरक्षा अभियान चलाया था। सन् 2024 में ओडिशा राज्य में विनाशकारी चक्रवात प्रभावित क्षेत्र को सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मार्कोस ने अपहत (भ्पहंबामक) जहाज एम0बी0 लीला नोरफोल्क से भू–चालक दल के सदस्यों को बचाया था।[11]

नेटवर्क केन्द्रित संचालन (एनसीओ) सेंसर निर्णय निर्माताओं और निशानेबाजों के बीच परिचालन जानकारी के वास्तविक समय या लगभग वास्तविक समय के सुरक्षित आदान–प्रदान के साथ सभी इकाइयों की नेटवर्किंग को शामिल करता है। भारत के जीसैट–7 उपग्रह के प्रक्षपेण और परिचालन ने पूरे आईओआर से हमारी समुद्री कमान, नियंत्रण, संचार और एनसीओ क्षमताओं को बढ़ाया है। भारतीय नौसेना इस क्षमता को 100 प्रतिशत विकसित करने के लिए प्रयासरत है। इसमें गगन उपग्रह पद्धति का महत्वपूर्ण येागदान होगा।[12]

समुद्री सुरक्षा सैन्य अभ्यास सुरक्षा संस्थाओं और राज्य प्रशासनों को गैर सामाजिक तत्वों की तरफ से मिलने वाली धमकी भरी चुनौतियों के प्रति तैयारी की आवाधिक आकलन करने के लिए भारतीय नौसेना द्वारा तटरक्षक बल, मरीन पुलिस, सीमा शुल्क व अन्य प्राधिकारियों के साथ मिलकर प्रत्येक तटीय राज्य में सुरक्षा अभ्यास आयोजित किये जाते है। इन युद्धाभ्यासों के दौरान अनेकों आकस्मिक परिदृश्यों की अनुकृति की गयी। जिसमें मछली पकड़ने वाले जहाजों को अपहरण करना, तट पर आतंकवादियों के आने पर उन्हें जहाजों पर ले जाकर उनका खात्मा करना आदि कार्य किये गये। सामुद्रिक सुरक्षा में हिस्सेदारी रखने वाली सभी एजेंसियों के समन्वयन में सुधार समेकन प्राप्त करने और अन्त में तटीय सुरक्षा प्रक्रिया में सुधार लाने के लिए कार्य करती है। सुरक्षा तंत्र का सही आकलन करने के लिए तथा विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के बीच समन्वय में सुधार कायम रखने के लिए संयुक्त सुरक्षा अभ्यास अत्यन्त ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जैसे– ट्रापेक्स युद्धाभ्यास, डी0जी0 एक्स युद्धाभ्यास, थीरा वेटा युद्धाभ्यास आपरेशन आइलैण्ड वाच, आदि के द्वारा भारतीय नौसेना व तटरक्षक बल लम्बे समय से द्वीपों पर निगरानी बनाये हुए है। इसके अतिरिक्त भारतीय नौसेना व तटरक्षक बलों के द्वारा अन्य दूसरे देशों के साथ अभ्यास कार्यक्रम को भी आयोजित करते है। जैसे– भारत–जापान के मध्य सहयोग काइजिन अभ्यास, भारत–सिंगापुर के मध्य सीमबेक्स अभ्यास, भारत–आस्ट्रेलिया के मध्य असिन्डेक्स नौसेना अभ्यास, भारत–थाईलैण्ड के मध्य समुद्री प्रहरी सैन्य अभ्यास, भारत–वियतनाम के मध्य सहयोग एचओपी टीएसी सैन्य अभ्यास और भारत–ब्राजील–दक्षिण अफ्रीका के मध्य ईब्सामार त्रिपक्षीय समुद्री अभ्यास शामिल है। जिसका मुख्य उद्देश्य आपसी सम्बन्धों को मजबूत करना, एक दूसरे के कार्यों की जानकारी, सामरिक अभ्यास और समुद्री सम्बन्धों को मजबूत करना होता है।

निष्कर्ष– हाल के वर्षों में ऐसी चुनौतियों को और बढ़ने की आशंका है। जिस पर भारत सरकार को विशेष ध्यान देने की जरूरत है। राष्ट्रीय सुरक्षा सीधे रूप से थल व जल क्षेत्र दोनों तरफ से प्रभावित करती है। अतः अपरम्परागत सुरक्षा चुनौतियों पर अंकुश और महासागर क्षेत्र को स्वतंत्र, समावेशी, शांतिपूर्ण और समृद्ध क्षेत्र बनाने के लिए भारत को रणनीतिक योजना के तहत कार्य करने की जरूरत है। सशक्त अर्थव्यवस्था, आत्मनिर्भर और सुसज्जित व आधुनिक नौसेना व तटरक्षक वर्तमान की आवश्यकता है। भारत अन्य समान मानसिकता वाले राष्ट्रों

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

के साथ अपरम्परागत सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए सहयोग और सुरक्षा आधारित नीति पर काम कर रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://www.icwa.iin/show_content.php?lang=2&level=2&ls_id=4293&lid=3187
2. https://www.indiannewsnetwork.com/hi/20240404/9-piratcs-captured-by-indian-navy-off-somalia-coast-handed-over-to-mumbai-police
3. navbharattimes.indiatimes.com/world/asian=countries/myanmar-overtakes-taliban-afganistan-as-world-biggest-opium-producer-says-united-natios-reports-amid-war/amp_articleshow/105921658.cms
4. नय्यर के0के0 मैरीटाइम इण्डिया, रूपा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2005, पृ0 186
5. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1739494
6. सिंह, अरविन्द कुमार, भारत में जल परिवहन, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2019, पृ0 189
7. https://thewire.in/environment/shipbreaking-ship-recycling-industry-sustinable-future-environment
8. https://www.indiandefencereview.com/spotlights/exteranals-noval-presence-in-indian-ocean
9. https://maritimeindia.org/reinvigorating-india-maldives
10. हरीशरण, सिन्हा हर्ष कुमार, हिन्द महासागर चुनौतियाँ एवं विकल्प, प्रत्यूष पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2018, पृ0 170
11. https://m.economictimes.com/news/defence/who-are-marcos-indian-narys-elite-commondo-personnel/marcos-save-teh-day-slideshow/106595714.cms
12. हरीशरण, सिन्हा हर्ष कुमार, हिन्द महासागर चुनौतियाँ एवं विकल्प, प्रत्यूष पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2018, पृ0 217

*****